

रायपुर , जबलपुर, कटनी, मंडला, भोपाल, इंदौर, मुंबई, दिल्ली, नरसिंहपुर, सिवनी से एक साथ प्रकाशित

yashbharat.co.in

नये जमाने के साथ..

यशभारत

● वर्ष- 01 अंक-76 ● रायपुर ● सोमवार, 28 सितम्बर , 2026 ● मूल्य- 4 रुपए ● पृष्ठ-8 ●अभिन कृष्ण, पक्ष2 ● विक्रम संवत् 2083

रिश्तों को समय और सम्मान दें। ये आपकी सबसे बड़ी पूँजी हैं।

कनाडा में उड़ते ही क्रैश हुआ हेलीकॉप्टर, पायलट समेत चार लोगों की मौत

मॉन्ट्रियल, एजेंसी। कनाडा के मॉन्ट्रियल शहर के पास एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने से चार लोगों की मौत हो गई। हादसा शनिवार दोपहर करीब



2:30 बजे मॉन्ट्रियल से लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में सेंट-ब्रिगिड-डी इबरविले इलाके में हुआ। बताया जा रहा है कि उड़ान के दौरान हेलीकॉप्टर में कुछ तकनीकी दिक्कत आई, जिसके बाद वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उसमें आग लग गई। वरुबेक प्रांतीय पुलिस की प्रवक्ता ऑर्डि-ऐनी बिलोड्यू के अनुसार, हादसे की सूचना मिलने के बाद दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे। करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया, लेकिन तब तक हेलीकॉप्टर में सवार चारों लोगों की मौत हो चुकी थी। पुलिस ने अभी मृतकों की पहचान सार्वजनिक नहीं की है। हादसे के कारणों का भी फिलहाल पता नहीं चल पाया है। प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक, हेलीकॉप्टर एक निजी विमान था। दुर्घटना की जांच के लिए कनाडा के ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड ने अपने जांचकर्ताओं को घटनास्थल पर भेज दिया है। इससे पहले अमेरिका के योसेमाइट नेशनल पार्क में जंगल की आग बुझाने के अभियान के दौरान एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हुआ था, जिसमें दो पायलटों की मौत हुई थी।

उज्जैन के चर्चित गोरकर बंधुओं के दोहरे हत्याकांड में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है।

उज्जैन, यशभारत। नीलगंगा थाना पुलिस और साइबर टीम ने लंबे समय से फरार चल रहे दो आरोपियों को कोरहल क्षेत्र में मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने खुद को घिरा रेस्कुर पुलिस टीम पर हमला कर भागने की कोशिश की। इसके बाद पुलिस ने आत्मरक्षा में कार्रवाई की, जिसमें दोनों आरोपियों के पैर में गोली लगी। घायल आरोपियों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपियों में सोलू पाली, उम्र 32 वर्ष, और विजय उर्फ छोटू, उम्र 21 वर्ष शामिल हैं। पुलिस ने बताया कि सोलू के खिलाफ पहले से कई आपराधिक मामले दर्ज हैं, जबकि विजय के खिलाफ भी पूर्व में मामले दर्ज रहे हैं।

दिल्ली के मंत्री प्रवेश वर्मा पर युवक को थप्पड़ मारने का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली सरकार में मंत्री प्रवेश वर्मा पर थप्पड़ मारने का आरोप लगा है। दरअसल, आम आदमी पार्टी एक वीडियो शेयर कर रही है, जिसमें दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश वर्मा एक युवक को थप्पड़ मारते नजर आ रहे हैं। आम आदमी पार्टी दावा कर रही है कि सवाल पूछने पर प्रवेश वर्मा ने युवक को थप्पड़ मारा। दरअसल, आज प्रदेश वर्मा तिलक नगर इलाके में सड़क निर्माण का निरीक्षण करने पहुंचे थे, जहां पर स्थानीय AAP विधायक जरनैल सिंह के साथ उनके समर्थक मौजूद थे। सड़क की कालिटी को लेकर प्रवेश वर्मा औरAAP विधायक जरनैल सिंह के बीच बहस हुई, जिसके बाद AAP कार्यकर्ताओं ने हंगामा शुरू कर दिया। इसी दौरान, AAP विधायक जरनैल सिंह के सोशल मीडिया का काम देखने वाला राक्षस प्रदेश वर्मा के सामने आकर वीडियो बनाने लगा। हालांकि, प्रदेश वर्मा और जरनैल सिंह के बीच वया बात हुई, ये बात आँखों और वीडियो में समझ नहीं आ रही है।

पीएम बोले- आतंकियों को करारा जवाब देंगे सर्जिकल स्ट्राइक ने दुनिया को भारत की नीति दिखाई

मन की बात में ऑपरेशन सिंदूर का भी जिक्र

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' के 138वें एपिसोड में आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति को लेकर कहा कि देश जोरो टोलरेंस की नीति पर चल रहा है। आतंकवादी अगर भारत की ओर आंख उठाकर देखेंगे तो उन्हें करारा जवाब दिया जाएगा। उन्होंने 28-29 सितंबर 2016 को हुई सर्जिकल स्ट्राइक का उल्लेख करते हुए कहा कि उरी में आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना ने सीमा पार जाकर आतंकी ठिकानों पर कार्रवाई की थी। इस कार्रवाई ने दुनिया को भारत की बदलती नीति का स्पष्ट संदेश दिया।प्रधानमंत्री ने बालाकोट एयरस्ट्राइक से लेकर ऑपरेशन सिंदूर तक का जिक्र करते हुए कहा कि पिछले एक दशक में भारत ने बार-बार यह स्पष्ट किया है कि आतंकवाद का जवाब मजबूत और निर्णायक तरीके से दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सर्जिकल स्ट्राइक भारत की आतंकवाद के

केदारनाथ मार्ग पर भूस्खलन से हजारों श्रद्धालु फंसे

अर्नब का कहर! यूपी में 58 लोगों की मौत, बिहार के 50 गांव जलमग्न

लखनऊ/नई दिल्ली , यशभारत। पहाड़ से मैदान तक मूसलाधार बारिश ने तबाही मचा दी है। बंगाल की खाड़ी से उठे चक्रवाती तूफान अर्नब का असर उत्तर प्रदेश में लोगों के लिए मौत का का कहर बनकर टूटा। अलग-अलग हादसों में उत्तर प्रदेश में दीवार और कच्चे मकान ढहने, पेड़ व बिजली के पोल गिरने जैसे हादसों में 58 लोगों की मौत हो गई। 117 से अधिक घर क्षतिग्रस्त हुए हैं। लखीमपुर खीरी में 342 मिमी बारिश दर्ज की गई, जबकि बांदा, हमीरपुर और कानपुर में बारिश ने पुराने रिकार्ड तोड़ दिए।

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ यात्रा मार्ग पर लगातार भूस्खलन से बड़ी संख्या में श्रद्धालु रास्ते में फंस गए हैं। पहाड़ी से लगातार मलबा गिरने के कारण मार्ग खोलने में भी दिक्कत आ रही है। खराब मौसम को देखते



हुए प्रशासन ने केदारनाथ धाम यात्रा को 27 सितंबर तक स्थगित कर दिया है। हेलीकॉप्टर सेवाएं भी मौसम खराब होने के कारण प्रभावित हैं। चारधाम यात्रा को भी सुरक्षा कारणों से रोक दिया गया है। उत्तराखंड के देहरादून, टिहरी, पौड़ी और हरिद्वार में रेड अलर्ट जारी किया है। उत्तरकाशी, चमोली, नैनीताल और रुद्रप्रयाग में ऑरेंज अलर्ट है, जबकि बागेश्वर, अल्मोड़ा,

चंपावत, ऊधमसिंह नगर और पिथौरागढ़ में यलो अलर्ट जारी किया गया है। कई इलाकों में भारी से अत्यंत भारी बारिश का अनुमान है। पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन आ सड़कें बंद होने का खतरा बना हुआ है।उत्तराखंड और हिमाचल के ऊंचाई वाले इलाकों में सीजन की पहली बर्फबारी हुई है। खराब मौसम के कारण चारधाम यात्रा रविवार तक रोक दी गई।

जज साहब... पैर कट गया, अब शादी नहीं होगी छतीसगढ़ हाई कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर सुनाया बड़ा आदेश सात लाख 23 हजार 360 रुपये अतिरिक्त मुआवजा देने का आदेश

बिलासपुर, यशभारत। सड़क हादसे में जांच से बायां पैर कटने से स्थायी रूप से दिव्यांग हुए महासमुंद जिले के सूरज अग्रवाल को हाई कोर्ट ने सात लाख 23 हजार 360 रुपये अतिरिक्त मुआवजा देने का आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि 23 साल की उम्र और शारीरिक स्थिति को देखते हुए विवाह की संभावनाएं प्रभावित होने के लिए भी मुआवजा दिया जाना उचित है।

इससे मुआवजा 41 लाख 12 हजार नौ रुपये से बढ़कर 48 लाख 35 हजार 369 रुपये हो गया। याचिकाकर्ता ने विकलांगता के चलते अपनी याचिका में शादी नहीं हो पाने का जिक्र किया था। छुईपाली, थाना सरायपाली निवासी सूरज अग्रवाल एक जुलाई 2021 को सड़क हादसे में घायल हुए थे इसके चलते उनका जांच से बायां पैर काटना पड़ा। चिकित्सकीय मंडल ने 80 प्रतिशत

स्थायी दिव्यांगता प्रमाणित की थी, लेकिन डॉक्टर के बयान के आधार पर दावा अधिकरण ने उनकी कमाई की क्षमता 100 प्रतिशत प्रभावित मानी थी।

अधिकरण ने 20 नवंबर 2023 को 41.12 लाख रुपये मुआवजा दिया था। सूरज की ओर से अधिवक्ता समीर सिंह ने कहा कि हादसे के समय अकुशल मजदूर की न्यूनतम मजदूरी 9,200 रुपये थी, जबकि अधिकरण ने 7,800 रुपये मासिक आय मानी। साथ ही विवाह की संभावनाएं प्रभावित होने के लिए कोई राशि नहीं दी गई। बीमा कंपनी ने अधिकरण को मुआवजे को उचित बताया। प्याथमूर्ति संजय कुमार जायसवाल ने आय 9,200 रुपये मानकर उसमें 40 प्रतिशत भविष्य की संभावित आय जोड़ते हुए कमाई क्षमता के नुकसान का मुआवजा 27.82 लाख रुपये तय किया।

लैंटर डालते ही भरभराकर गिरी इमारत 4 मजदूरों की मौत; मलबे में कई दबे

अंबाला में बड़ा हादसा, 40-50 श्रमिक कर रहे थे काम, 10 घायल

अंबाला , एजेंसी। हरियाणा के अंबाला में रविवार दोपहर निर्माणाधीन भवन का लैंटर डालते समय अचानक पूरी इमारत भरभराकर गिर गई। हादसे के वक्त भवन में करीब 40 से 50 मजदूर काम कर रहे थे। अचानक आए मलबे में कई श्रमिकों के दबे होने की आशंका है। हादसे में अब तक चार मजदूरों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि 10 घायलों को मलबे से निकालकर अंबाला सिटी के नागरिक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मौके पर राहत और बचाव कार्य लगातार जारी है।

हादसा अंबाला के धूलकोट गांव क्षेत्र में हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक लैंटर डालने का काम चल रहा था, तभी अचानक निर्माणाधीन ढांचा भरभराकर नीचे आ गया। कुछ ही पलों में मौके पर मलबे का ढेर लग गया और वहां काम कर रहे मजदूर उसके नीचे दब गए। हादसे के बाद आसपास के इलाके में अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने तत्काल राहत कार्य शुरू किया और पुलिस तथा डायन-112 को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन की टीमों राहत एवं बचाव उपकरणों के साथ मौके पर पहुंची। जेसीबी और अन्य भारी मशीनों की मदद से मलबा हटाया जा रहा है। बचाव-दल का पूरा ध्यान मलबे में फंसे श्रमिकों की जल्द



बाहर निकालने पर है। मलबे के बड़े हिस्से को सावधानी से हटाया जा रहा है, ताकि उसके नीचे दबे लोगों तक पहुंचा जा सके।मलबे से निकाले गए 10 घायल श्रमिकों को तत्काल अंबाला सिटी के नागरिक अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका उपचार जारी है। प्रशासन की ओर से घायलों की स्थिति पर नजर रखी जा रही है। हादसे में मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका के बीच रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है।प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार फिलहाल प्राथमिकता मलबे में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने और घायलों को तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की है। राहत कार्य पूरा होने के बाद हादसे के कारणों की जांच की जाएगी।अगर चाहेें तो मैं इसे फट पेज की 300-350 शब्दों की और ज्यादा सनसनीखेज लेकिन तथ्यपरक लीड में भी तैयार कर सकता हूँ।

यूपीआई एटीएम पर नहीं पड़ेगा बड़ा असर, शाखाओं के काम होंगे प्रभावित

नई दिल्ली, यशभारत। यूनाइटेड फोर्म ऑफ बैंक यूनियंस (FBU) के आह्वान पर 28 से 30 सितंबर तक प्रस्तावित तीन दिवसीय देशव्यापी बैंक हड़ताल का सबसे ज्यादा असर बैंक शाखाओं में होने वाले कामकाज पर पड़ेगा। हड़ताल से पहले 26 सितंबर को शनिवार और 27 सितंबर को रविवार होने के कारण ग्राहकों को लगातार कई दिनों तक शाखा आधारित बैंकिंग सेवाओं में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि सरकार ने ग्राहकों की सुविधा के लिए 27 सितंबर रविवार को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को सामान्य रूप से खोलने की व्यवस्था की है।

बैंक हड़ताल का मतलब यह नहीं है कि यूपीआई , इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग बंद हो जाएगी। इन डिजिटल सेवाओं के सामान्य रूप से चलते रहने की उम्मीद है। ग्राहक यूपीआई

पाकिस्तान में आत्मघाती हमले में 13 की मौत

डेरा इस्माइल खान , एजेंसी। उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में सड़क किनारे बने पुलिस चेकपॉइंट पर शनिवार को एक आत्मघाती बम हमला हुआ। इस घटना में 13 लोगों की मौत हो गई, जबकि कम से कम 35 लोग घायल बताए जा रहे हैं। प्रांतीय आपातकालीन सेवा के प्रवक्ता बिलाल फैजी ने बताया कि यह हमला खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के डेरा इस्माइल खान जिले में हुआ, जिसमें विस्फोटकों से लदी गाड़ी का इस्तेमाल किया गया था। स्थानीय पुलिस प्रमुख सफ़दर बलोच ने कहा कि मारे गए और घायल हुए लोगों में ज्यादातर सुरक्षाकर्मी और राहगीर थे। विस्फोट से बड़ा चेकपॉइंट तबाह हो गया और चश्मदीदों ने बताया कि हमले के बाद गोलियों की आवाज भी सुनी गई। फैजी ने बताया कि जब आपातकालीन टीमें पीड़ितों को पास के अस्पताल ले जा रही थीं, तब बंदूकधारियों ने एम्बुलेंस पर गोलीबारी की, जिसमें एक बचावकर्मी की मौत हो गई।

छत्तीसगढ़ में बाढ़ का कहर 300 से अधिक बस्तियां प्रभावित, छह हजार से ज्यादा लोग राहत शिविरों में

जगदलपुर, यशभारत। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में लगातार बारिश के बाद बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है। जगदलपुर शहर और बस्तर जिले के ग्रामीण इलाकों में 300 से अधिक बसाहटें बाढ़ से प्रभावित हुई हैं।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से छह हजार से अधिक लोगों को सुरक्षित निकालकर राहत शिविरों में पहुंचाया गया है। वहीं, जगदलपुर शहर से सटे डोंगा घाट क्षेत्र में बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को निकालने के लिए सेना के हेलीकॉप्टर की मदद ली जा रही है। डोंगा घाट में रविवार सुबह करीब 7.30 बजे सेना का हेलीकॉप्टर भेजा गया। इंद्रावती नदी का पानी इस क्षेत्र में भर जाने के कारण यहां कई लोग फंस गए हैं। प्रशासन और राहत-बचाव दल प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने में जुटे हैं।

इंद्रावती नदी का जलस्तर शनिवार देर रात करीब दो बजे अपने उच्चतम स्तर 12.46 मीटर तक पहुंच गया। नदी का खतरे का निशान 8.30 मीटर है। इस तरह नदी का जलस्तर खतरे के निशान से चार मीटर से अधिक ऊपर चला गया।



हालांकि इसके बाद जलस्तर में गिरावट शुरू होने से प्रशासन ने राहत की उम्मीद जताई है।जल संसाधन विभाग के इंद्रावती परियोजना के अधीक्षण यंत्री वीपी पांडे के अनुसार, यदि आगे बारिश नहीं होती है तो बाढ़ का पानी पूरी तरह उतरने में करीब दो दिन का समय लग सकता है। हालांकि प्रभावित इलाकों में स्थिति सामान्य होने तक प्रशासन की निगरानी और राहत-बचाव कार्य जारी रहेगा। बाढ़ प्रभावित इलाकों में प्रशासन की ओर से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने की अपील की जा रही है। राहत शिविरों में पहुंचाए गए लोगों के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं।

उदयपुर में एसीबी की बड़ी कार्रवाई, 2 करोड़ की रिश्तत लेते एसओजी एससपी का कथित दलाल गिरफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी। राजस्थान के उदयपुर में एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप (एसओजी) के एडिशनल एसपी मुकेश कुमार सोनी के नाम पर 2 करोड़ रुपए की रिश्तत लेते एक कथित बिचौलिया को रोहताथ गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सज्जन कुमार के रूप में हुई है। एसीबी के अनुसार, रिश्तत की रकम एक मुकदमे में मदद और राहत दिलाने के एवज में मांगी गई थी। शिकायत मिलने के बाद एसीबी ने पहले मामले का सत्यापन कराया।



शिकायत सही पाए जाने के बाद टीम ने रिश्तत की रकम के लेन-देन पर नजर रखी और कार्रवाई की। इसी दौरान सज्जन कुमार को 2 करोड़ रुपए नकद लेते हुए पकड़ लिया गया। एसीबी का कहना है कि

आज से 30 सितंबर तक बैंक कर्मचारी हड़ताल पर



यूपीआई एटीएम पर नहीं पड़ेगा बड़ा असर, शाखाओं के काम होंगे प्रभावित

नई दिल्ली, यशभारत। यूनाइटेड फोर्म ऑफ बैंक यूनियंस (FBU) के आह्वान पर 28 से 30 सितंबर तक प्रस्तावित तीन दिवसीय देशव्यापी बैंक हड़ताल का सबसे ज्यादा असर बैंक शाखाओं में होने वाले कामकाज पर पड़ेगा। हड़ताल से पहले 26 सितंबर को शनिवार और 27 सितंबर को रविवार होने के कारण ग्राहकों को लगातार कई दिनों तक शाखा आधारित बैंकिंग सेवाओं में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि सरकार ने ग्राहकों की सुविधा के लिए 27 सितंबर रविवार को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को सामान्य रूप से खोलने की व्यवस्था की है।

बैंक हड़ताल का मतलब यह नहीं है कि यूपीआई , इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग बंद हो जाएगी। इन डिजिटल सेवाओं के सामान्य रूप से चलते रहने की उम्मीद है। ग्राहक यूपीआई

, के जरिए पैसे भेजने, चक्रकोड से भुगतान करने, ऑनलाइन बिल जमा करने और मोबाइल या इंटरनेट बैंकिंग से कई तरह के लेन-देन कर सकेंगे। हालांकि तकनीकी खराबी या सर्वर संबंधी समस्या होने पर सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं। एटीएम सेवाओं के भी चालू रहने की उम्मीद है। SBI समेत कई बैंकों ने ग्राहकों को हड़ताल के दौरान एटीएम, ADWM, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग और यूपीआई ,जैसी वैकल्पिक सेवाओं का इस्तेमाल करने की सलाह दी है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने हड़ताल के दौरान ATM में पर्याप्त नकदी उपलब्ध रखने के निर्देश भी दिए हैं। हड़ताल से कर्मचारी की प्रत्यक्ष सहायता वाले काम प्रभावित हो सकते हैं। इनमें बैंक काउंटर पर नकद जमा या निकासी, चेक से जुड़े काम, दस्तावेज जमा करना, CYC संबंधी कार्य, खाता संबंधी कुछ सेवाएं और अन्य शाखा आधारित लेन-देन शामिल हैं। चेक क्लियरिंग और सेटलमेंट जैसे कामों में भी देरी की संभावना है।

नेपाल में तिब्बत सीमा के पास हिमस्खलन, 10 लोग लापता

हिमलुंग हिमाल ,एजेंसी। पश्चिमी नेपाल में तिब्बत की सीमा से लगे हिमलुंग हिमाल के बेस कैंप पर हिमस्खलन का मामला सामने आया है। यहां हिमस्खलन की चपेट में आने से कम से कम 10 लोग लापता हो गए हैं। आयोजक मिंगमा ग्याल्जे शेर्पा ने पुष्टि की कि हिमस्खलन के बाद लापता लोगों में उनके किचन के दो कर्मचारी भी शामिल थे। उन्होंने कहा, «हिमस्खलन रविवार सुबह को हुआ।» मिंगमा ग्याल्जे शेर्पा के अनुसार, पिछले सप्ताह मौसम की चेतावनी जारी होने के बाद अभियान टीमों और रस्सी लगाने वाली टीमों ने पहाड़ की ढलानों को खाली कर दिया था, जबकि कुछ लोग अनिच्छा से वहीं रुक गए थे। दरअसल, पहाड़ी इलाके में कई दिनों तक भारी बर्फबारी हुई, जिससे पर्वतारोहियों को पहाड़ पर चढ़ाई से पीछे हटना पड़ा। रविवार के हिमस्खलन में लापता लोग अलग-अलग अभियान कंबिनयों से हैं। मनांग जिले में 7,126 मीटर ऊंचे हिमलुंग हिमाल के लिए हेलीकॉप्टर उड़ानों के लिए अतिरिक्त परमिट की आवश्यकता होती है, जिससे पहाड़ तक पहुंचने में कठिनाइयां बढ़ जाती हैं।

7,126 मीटर ऊंची यह चोटी अधिक ऊंचाई पर अनुभव करने वाले पर्वतारोहियों के लिए एक लोकप्रिय लक्ष्य है। यह घटना ऐसे समय में हुई है जब बंगाल की खाड़ी के ऊपर बने दबाव के कारण पहाड़ों पर भारी बर्फबारी और नेपाल की पहाड़ियों और मैदानी इलाकों में लगातार बारिश हो रही है। बारिश और बर्फबारी ने देश के कई हिस्सों को प्रभावित किया है। नेपाल में शुक्रवार से खराब मौसम की स्थिति बनी हुई है, जिससे सड़कें बाधित हो गई हैं।

एशियाड में एथलेटिक्स का पदकों का पंच: भारत ने एक दिन में जीते पांच मेडल

एंसी-सरवेश के रजत पर हरिता-तेजस्विन-पारुल ने चढ़ाया कांस्य



करने वाला रहा। भारत ने पिछली बार 2018 एशियन गेम्स में दुती चंद के जरिए 200 मीटर में पदक जीता था। 23 वर्षीय हरिता ने एशियाड से पहले नेशनल इंटर-स्टेट चैंपियनशिप में 23.14 सेकंड का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय निकाला था। पुरुषों के डेकाथलॉन में तेजस्विन शंकर ने 7,934 अंक जुटाकर कांस्य पदक जीता। दो दिन चली इस कठिन स्पर्धा में तेजस्विन पहले दिन 4,338 अंकों के साथ शीर्ष पर थे। अंतिम इवेंट 1500 मीटर में उन्होंने 4:33.09 का समय निकालकर कांस्य सुनिश्चित किया। हंगझोउ एशियन गेम्स में रजत जीतने के बाद यह उनका लगातार दूसरा एशियाई खेल पदक है।महिलाओं की लंबी कूद में

एंसी सोजने ने 6.53 मीटर की छलांग लगाकर रजत पदक जीता। वह अधिकांश समय स्वर्ण की दौड़ में आगे थीं, लेकिन चीन की हुआंग यिंगयिंग ने आखिरी प्रयास में 6.55 मीटर की छलांग लगाकर स्वर्ण अपने नाम कर लिया। दोनों के बीच महज दो सेंटीमीटर का अंतर रहा। इसी स्पर्धा में शैली सिंह 6.42 मीटर के साथ चौथे स्थान पर रहीं।बारिश के बीच पुरुषों की ऊंची कूद में सरवेश कुशारे ने 2.25 मीटर की ऊंचाई पार कर रजत पदक जीता। चीन ताद्घे के चाओ शुआन-फू ने भी 2.25 मीटर पार किया, लेकिन उन्होंने यह ऊंचाई पहले प्रयास में हासिल की थी, जबकि सरवेश को दूसरे प्रयास में सफलता मिली। इसी आधार पर चाओ को स्वर्ण और सरवेश को रजत मिला। महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज में पारुल चौधरी ने 9:४0.67 का समय निकालकर कांस्य जीता। यह उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। बहरीन की विनफ्रेड यावी ने स्वर्ण और कजाकिस्तान की नोरा जेरुटी तनुई ने रजत जीता। भारत की अंकिता 9८:19.24 के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ चौथे स्थान पर रहीं।

शुभांक-9-3-8

संपादकीय

भारत में बढ़ते पारिवारिक सामूहिक हत्याकांड: गंभीर चिंता का विषय



भारत में परिवार के भीतर एक साथ कई लोगों की हत्या या सामूहिक मौत की घटनाएं समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। ऐसी घटनाओं के पीछे अक्सर पारिवारिक कलह, आर्थिक संकट, मानसिक तनाव, संपत्ति विवाद, नशे की समस्या और अंधविश्वास जैसे कई कारण सामने आते हैं। हालांकि, किसी घटना के पीछे एक ही कारण मान लेना उचित नहीं है।

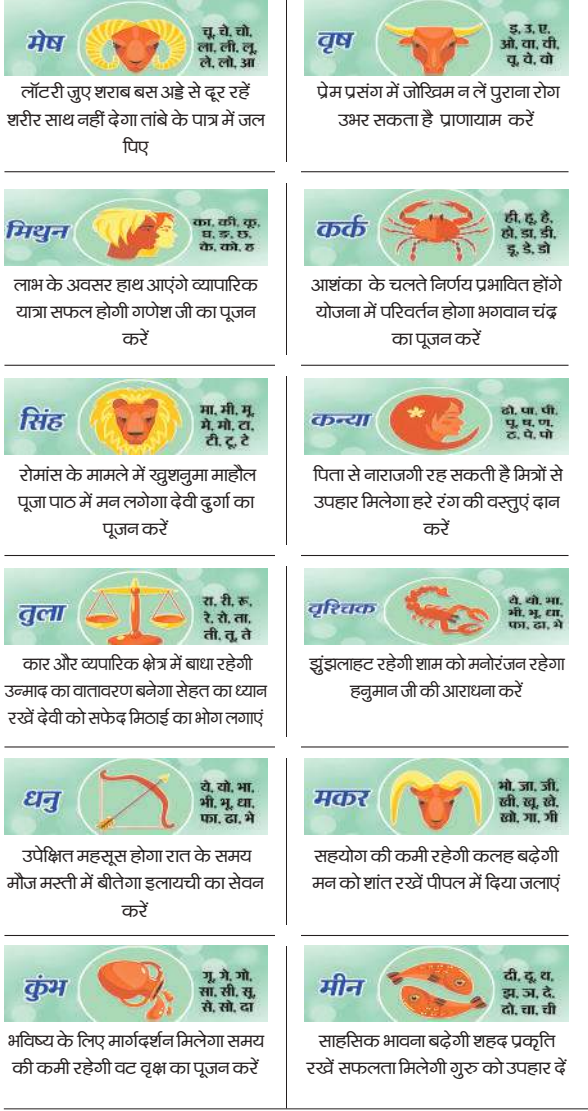
आर्थिक संकट और कर्ज ऐसे मामलों में महत्वपूर्ण कारक हो सकते हैं। व्यापार में भारी नुकसान, कर्ज, स्ट्रेटबाजी या निवेश में बड़ी आर्थिक क्षति से व्यक्ति अत्यधिक तनाव में आ सकता है। इसके चेतावनी संकेत हैं—लगातार पैसों की चिंता, परिवार से आर्थिक स्थिति छिपाना, अचानक निराश या चिड़चिड़ा रहना, नौकरी या कारोबार से जुड़ी गंभीर पेशानी और भविष्य को लेकर निराशाजनक बातें करना।

पारिवारिक कलह और संपत्ति विवाद भी हिंसा का कारण बन सकते हैं। जमीन-जायदाद, वैवाहिक संबंधों में तनाव या लंबे समय से चले आ रहे विवाद स्थिति को गंभीर बना सकते हैं। बार-बार धमकी देना, अत्यधिक शक करना, गुस्से में चीजें तोड़ना, परिवार के सदस्यों को नियंत्रित करना या हिंसा की बात करना गंभीर चेतावनी संकेत माने जाने चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी भी जोखिम बढ़ा सकती है। अत्यधिक तनाव, गंभीर मानसिक बीमारी, नशे की समस्या या गुस्से पर नियंत्रण न होना व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। अचानक व्यवहार में बड़ा बदलाव, सामाजिक रूप से अलग-थलग पड़ना, असामान्य डर या संदेह, नींद में भारी बदलाव, अत्यधिक उत्तेजना या खुद अथवा दूसरों को नुकसान पहुंचाने की बात को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

हालांकि, मानसिक बीमारी को हिंसा का पर्याय मानना गलत है। अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र से जुड़े विश्वास भी कुछ मामलों में गंभीर परिणाम दे सकते हैं। किसी व्यक्ति का परिवार को खतरनाक धार्मिक अनुष्ठानों के लिए मजबूर करना या वास्तविक समस्याओं के बजाय अलौकिक कारणों को जिम्मेदार बताना चेतावनी का संकेत हो सकता है।

इन संकेतों को देखकर परिवार को व्यक्ति को अकेला छोड़ने के बजाय शक्तिपूर्वक कदम उठाने, भरोसेमंद लोगों की मदद और जरूरत पड़ने पर मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ या कानूनी सहायता लेनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति से तत्काल हिंसा का खतरा हो, तो परिवार को पहले अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए स्थानीय पुलिस या आपातकालीन सहायता से संपर्क करना चाहिए। ऐसी घटनाओं की रोकथाम केवल घटना के बाद कार्रवाई से नहीं, बल्कि समय रहते खतरे के संकेत पहचानने, संवाद बढ़ाने और सहायता उपलब्ध कराने से संभव है।



विचार प्रवाह

देह चली गई, स्वर रह गया – लता होने का अर्थ यही है

प्रसंगवश - 28 सितंबर: लता मंगेशकर जयंती

कुछ आवाज़ें सुनी नहीं जाती-वे भीतर कहीं घटित होती हैं। वे कानों की देहरी लोंघकर स्मृतियों में उतरती हैं और फिर समय बीतने के साथ धुँधली होने के बजाय और उजली होती जाती हैं। लता मंगेशकर का स्वर ऐसी ही विलक्षण अनुभूति था। उन्होंने सुनों को केवल गाया नहीं, उन्हें भारतीय मन की धड़कन बना दिया। 28 सितंबर 1929 को इंदौर के एक साधारण मराठी परिवार में जन्मी हेमा को पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर ने 'लता' नाम दिया (पिता के नाटक भावबंधन की पात्र लतिका के नाम पर)। तब यह एक बच्ची का नाम था; आगे चलकर यही नाम भारतीय संगीत की सबसे उजली पहचान बन गया। पाँच वर्ष की उम्र में पिता के नाटकों से शुरू हुआ अभिनय धीरे-धीरे संगीत की ऐसी साधना में बदल गया, जिसने अंततः एक पूरे युग की ध्वनि रच दी।

जिस उम्र में सपने आकार लेते हैं, उसी उम्र में लता के कंधों पर परिवार की जिम्मेदारी आती है। 1942 में तेरह वर्ष की उम्र में पिता का निधन हुआ। लता की चिंता थी, भविष्य अनिश्चित था और संर्षण उम्र से सुरू बड़ा। रोटी में परिस्थितियों के आगे झुकने के बजाय अपनी आवाज़ को सहारा बनाया। मराठी फिल्म 'किती हसाल' (1942) में उनका पहला गीत रिकार्ड हुआ (हालाँकि बाद में फिल्म के फ़ाइनल कट से हटा दिया गया), लेकिन हिंदी सिनेमा की राह आसान नहीं थी। नूरजहाँ की ओर शायदाब बेगम जैसी दमदार आवाज़ों के बीच उनकी कोमल आवाज़ को 'पतली' कहकर नकार दिया गया। उन्होंने जवाब बहस से नहीं, रियाज से दिया। 1948 की फिल्म मजबूर में गुलाम हैदर द्वारा दिए गए गीत 'दिल मेरा तोड़ा' में भी उन्हें महत्वपूर्ण पहचान मिली। फिर 1949 में 'महल' का 'आपणा आनेवाला' आया और उसी आवाज़ ने हिंदी पार्श्वगायन की दिशा बदल दी।

एक ही आवाज प्रेम, विरह और प्रार्थना—तीनों को अपना रूप दे सके, तो उसकी कल्पना कहीं समझी जा सकती है। लता का स्वर किसी एक भाव को तब तक सीमित नहीं था। 'रंग जा गले' में प्रेम, 'तेरे बिना ज़िंदगी' में विरह, 'रिश्तों की कसक और 'आजा रे परदेसी' में विरह की तड़प थी। 'ज्योति कलश छलके' और 'ओ पालनहार' में वहीं स्वर भक्ति भवन गाया। वे केवल गीत नहीं गाती थीं, उसके भाव को स्वर देती थीं। 1962 के केली युद्ध के बाद, 26 जनवरी 1963 को गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम-



में 'ए मेरे वतन के लोगों' ने राष्ट्रीय भावना को आवाज दी। जवाहरलाल नेहरू की आँखें नम हुईं और पूरा देश भावुक हो उठा। उस क्षण लता केवल गायिका नहीं रहीं; उनकी आवाज राष्ट्र की साझा संवेदना बन गई।

लता की महानता केवल उनकी आवाज़ में नहीं, उस आवाज़ के पीछे की साधना में थी। वे स्टूडियो समय से पहले पहुँचतीं, गीत के हर शब्द को समझतीं और उस गाने से पहले भीतर उतारती थीं। उनके लिए एक तरकीब नहीं, साधना था। वे स्टूडियो को मदद मानती थीं और अक्सर नंगे पाँव गीत रिकॉर्ड करती थीं। नौशाद, मंदार मोहन, शंकर-जयकिशन और आर.डी. बर्मन जैसे संगीतकारों के साथ उनका रिश्ता केवल काम तक सीमित नहीं रहा; उनकी रचनात्मकता एक-दूसरे का विस्तार बनी। छत्तीस से अधिक भाषाओं में तीस हजार से अधिक गीतों का सफर भारतीय संगीत पर उनकी अमिट छाप है। हिंदी सिनेमा को व्यापक पहलान देने के साथ उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं में भी अपनी गहरी उपस्थिति दर्ज की, जिसकी गूँज आज भी सुनाई देती है।

कुछ दीवारें आवाज से नहीं, लगातार मौजूदगी से गिरती हैं। लता ने भी यही किया। जिस दौर में महिला कलाकारों के लिए सीमाएँ तय थीं, उन्होंने बिना शोर उन सीमाओं को पार किया। उनकी कोमल आवाज ने बता दिया कि ताकत ऊँचा बोलने में नहीं, असर छोड़ने में होती है।

आधुनिक जीवनशैली के आघात से हृदय की रक्षा जरूरी

विश्व हृदय दिवस 29 सितंबर 2026

हृदय केवल शरीर का एक अंग नहीं, जीवन की धड़कन है। जब तक दिल धड़कता है, तब तक जीवन में उम्रिद, संवेदना, प्रेम और सभ्यता में संभावनाएँ बनी रहती हैं। लेकिन विडंबना यह है कि आधुनिक सभ्यता ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, पर स्वस्थ और संतुलित बनाने में हम पीछे छूटते जा रहे हैं। हमारी तेज रफ्तार जिंदगी, तनाव, अनियमित बदनगुंथ, खान-पान की बदलती आदतें, शारीरिक निष्क्रियता और निरंतरतनवी मानसिक बैचैनी हृदय पर ऐसा दबाव डाल रही हैं, जिसका परिणाम हृदय रोगों के बढ़ते खतरों के रूप में सामने आ रहा है।

हर वर्ष 29 सितंबर को विश्व हृदय दिवस मनाया जाता है। विश्व हृदय महाराथ के अनुसार हृदय एवं रक्तवाहिका संबंधी रोग दुनिया में मृत्यु का सबसे बड़ा कारण हैं और प्रतिवर्ष लगभग दो करोड़ लोगों की मृत्यु इन रोगों से होती है। वर्ष 2026 के विश्व हृदय दिवस का संदेश है - 'हृदय रोग कई बार सामने दिखाई नहीं देता, इसलिए उसके संकेतों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

जैसे अपने पूर्व के आलेख 'भारतीय दिल खतरे में' और हृदय स्वास्थ्य से जुड़े अन्य लेखों में बार-बार इस चिंता को व्यक्त किया है कि भारतीय समाज में बदलती जीवनशैली हमारे दिल के लिए गंभीर चुनौती बनती जा रही है। आज यह चिंता और अधिक प्रासंगिक हो गई है। हमारे आसपास ऐसे अनेक युवा दिखाई देते हैं जो कम उम्र में ही उच्च रक्तचाप, मोटापा, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल और हृदय संबंधी समस्याओं से जूझ रहे हैं। प्रश्न केवल यह नहीं कि हृदय रोग क्यों बढ़ रहे हैं, प्रश्न यह भी है कि हमने अपनी जीवनशैली को हृदय के विरुद्ध क्यों बना दिया है?

आज सुविधा ने श्रम को काम कर दिया है। घंटों बैठकर काम करना, मोबाइल और कंप्यूटर पर लगातार सक्रिय रहना, पैदल चलने के आदत का कम होना, देर रात तक जागना और सुबह की प्राकृतिक लय से दूर होना शरीर की जैविक व्यवस्था को प्रभावित करता है। दूसरी ओर स्वाद और सुविधा के नाम पर अत्यधिक नमक, चीनी, वसा और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन बढ़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी अस्वास्थ्य आहार, शारीरिक निष्क्रियता, तंबाकू, मोटापा, उच्च रक्तचाप, बड़ी हड्डि रक्तशर्करा और रक्त में वसा को हृदय रोग के प्रमुख जोखिम कारकों में गिनता है।

लेकिन हृदय का संकेत केवल भोजन और व्यायाम का संकेत नहीं है। यह मन का संकेत भी है। तनाव, प्रतियोगिता, असंतोष, क्रोध, ईर्ष्या, चिंता और हर समय आगे निकलने की बैचैनी व्यक्ति के भीतर निरंतर मानसिक दबाव

पेदा करती है। भौतिक उपलब्धियां बढ़ती जाती हैं, लेकिन मानसिक शांति घटती जाती है। हमने मकानों को बड़ा किया, लेकिन मन को छोटा कर लिया; साधन बढ़ाए, लेकिन संतोष कम कर दिया। यही आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है।

इष्टावस्था हृदय की चिकित्सा केवल अस्पताल में नहीं, जीवनशैली में भी खोजनी होगी। सुबह की सैर, नियमित व्यायाम, योग, प्राणायाम, ध्यान, सामान्य नींद, संतुलित भोजन और नरेश से पूर्ण दूरी हृदय की सुरक्षा के परामर्शपूर्ण लेकिन अत्यंत प्रभावी उपाय हैं। भोजन में प्राकृतिक एवं पौष्टिक पदार्थों, फल-सब्जियों और साबुत अनाज को स्थान देना तथा अत्यधिक नमक, चीनी और संतृप्त वसा को सीमित करना जरूरी है। निश्च स्वास्थ्य संगठन के अनुसार जीवनशैली में ऐसे बदलाव तथा उच्च रक्तचाप, मधुमेह और रक्त में बढ़े वसा का समय रहते उपचार हृदयाघात और स्ट्रोक के जोखिम को कम कर सकता है।

आवस्य महत्वपूर्ण आवश्यकता है-समय रहते जांचा। हृदय रोग कई बार अचानक सामने आता हुआ दिखाई देता है, जबकि उसके जोखिम कारक वर्षों से शरीर में विकसित हो रहे होते हैं। रक्तचाप, रक्तशर्करा, कोलेस्ट्रॉल, वजन और चिकित्सकीय सलाह के अनुरूप अवस्था जांचों को और जोखिम जोखिम के अनुरूप नियमित रूप से कराना चाहिए। सीने में दबाव या दर्द, सांस फूलना, असामान्य पसीना, चक्कर या दर्द का हाथ, कंधे, पीठ अथवा जबड़े तक जाना जैसे संकेतों को सामान्य थकान मानकर टालना खतरनाक हो सकता है। हृदयाघात में समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है; शीघ्र चिकित्सा सहायता जीवन बचाने में निर्णायक हो सकती है।

यहां चिकित्सा विज्ञान के सामने भी एक बड़ी जिम्मेदारी है। आज जब हृदय रोग समाज के हर तने बड़े हिस्से को प्रभावित कर रहे हैं, तब हमें और अधिक सुलभ, सस्ती, शीघ्र पहचान करने वाली और प्रभावी स्वास्थ्य-तकनीकों की आवश्यकता है। ऐसी जांच-पड़तालें विकसित हों जो प्रारंभिक अवस्था में हृदय संबंधी जोखिमों की पहचान कर सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल स्वास्थ्य, दूरस्थ चिकित्सा, पहनने योग्य स्वास्थ्य उपकरणों और आधुनिक निदान तकनीकों का उपयोग आम नागरिक तक पहुंचना चाहिए। चिकित्सा अनुसंधान का लक्ष्य केवल जटिल हृदय रोग का उपचार करना नहीं, बल्कि रोग पैदा होने से पहले उसके खतरों को पहचानना भी होना चाहिए।

सरकारों को भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हृदय स्वास्थ्य को केवल अस्पतालों और विशेषज्ञ चिकित्सकों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को मजबूत बनाकर रक्तचाप, मधुमेह और हृदय जोखिम की नियमित जांच को व्यापक बनाया जाना चाहिए। स्कूलों और

लाखों लड़कियों के लिए वे प्रेरणा बन गईं कि कठिन परिस्थितियों में प्रतिभा और परिश्रम रास्ता बना सकते हैं। अपार सम्मान और वैभव के बावजूद उनकी सादगी बनी रही। वे कहती थीं, 'मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार जनता का प्यार है।' पद्म भूषण (1969), पद्म विभूषण (1999), दादा साहब फाल्के पुरस्कार (1989), भारत रत्न (2001) और फ्रांस का लीजोन ऑफ ऑनर (2009) उन्हें मिले, लेकिन उनकी पहचान इन सम्मानों से कहीं बड़ी रही।

कुछ विवादियाँ केवल एक व्यक्ति को दूर करती हैं, कुछ पूरे युग की धड़कन थाम देती हैं। 6 फरवरी 2022 को लता मंगेशकर के निधन पर ऐसा ही लगा, जैसे भारतीय संगीत की एक अनुपम धारा रुक गई हो। लेकिन महान स्वर मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होते, वे स्मृतियों में जीवित रहते हैं। आज भी किसी पुराने गीत की पहली पंक्ति सुनते ही उनकी आवाज भीतर उतर जाती है—कभी माँ की ममता बनकर, कभी मंदिर की घंटी—सी पवित्रता लेकर, तो कभी राग की गहराई बनकर। देह चली गई, लेकिन स्वर आज भी घरों, रेडियो और दिलों में जीवित है। पीढ़ियाँ बदलेंगी, समय आगे बढ़ेगा, मगर लता की आवाज हर दौर में लौटती रहेगी। शायद अमरता यही है—देह का चले जाना और स्वर का रह जाना।

लता मंगेशकर की जयंती उनके विवाट योगदान की याद करने का अवसर है—उस स्वर-साम्राज्य का, जिसका कोई सिंहासन नहीं था, फिर भी करोड़ों दिलों पर उसका राज था। उसका जीवन बताता है कि कलाकार केवल उपलब्धियों से बड़ा नहीं होता; वह तब मानक बनता है, जब उसकी साधना और प्रतिभा समय की कसौटी पर खरी उतरती है। उन्होंने गायन को सुरु-ताल से आगे भावों की ऐसी भाषा दी, जिसे पीढ़ियों ने अपने जीवन में महसूस किया। कठोर रियाज, अनुशासन और सादगी उनकी साधना की पहचान रहे। हजारों गीतों में भारतीय जीवन के अनगिनत रंग समाए और पार्श्वगायन को नई ऊँचाई मिली। संगीत के रूप बदलेंगे, सुनने के ढंग बदलेंगे, लेकिन लता मंगेशकर का योगदान भारतीय संगीत की बुनियाद में दर्ज रहेगा। उन्होंने केवल गीत नहीं गाए; उन्होंने भारतीय मन को गुनगुनाने की एक स्थायी भाषा दे दी।

कृति आरके जैन

कलेजों में शारीरिक गतिविधि एवं पौष्टिक भोजन को प्रोत्साहन मिले। शहरों में पैदल चलाने और साइकिल चलाने के सुरक्षित मार्ग बढें। तंबाकू, शराब, स्वस्थ खाने वाली वस्तुओं को बढ़ावा, अत्यधिक नमक एवं अस्वास्थ्यकर वसा को कम करने के प्रयास और वायु प्रदूषण पर नियंत्रण को हृदय स्वास्थ्य की व्यापक नीति का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी जनस्वास्थ्य नीतियों, प्रारंभिक स्वास्थ्य सेवाओं और जोड़ियम कारकों के नियंत्रण को हृदय रोगों की रोकथाम का महत्वपूर्ण आधार मानता है।

इसके साथ ही सरकारों को 'हार्ट हेल्थ इंडिया अभियान' जैसे व्यापक जन-जागरूकता कार्यक्रमों पर विचार करना चाहिए, जिसमें गांव से महानगर तक नि:शुल्क या सस्ती हदय चक्र, रक्तचाप एवं मधुमेह स्क्रीनिंग, जीवन-शैली परामर्श, आपातकालीन हृदय उपचार की जानकारी और पुनर्वास सेवाओं को जोड़ा जा सके। कंपनियों और संस्थानों में भी कर्मचारियों के लिए 'हेल्दी हार्ट' कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। सामाजिक संस्थाएं, विद्यालय, धार्मिक संगठन और मीडिया मिलकर इसे जन-आंदोलन का रूप दे सकते हैं।

असल, हृदय की रक्षा केवल डॉक्टर की जिम्मेदारी नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है। परिवार अपने भोजन और दिनचर्या को बदल सकता है, विश्वारिथ्य बच्चों में स्वस्थ आदतें विकसित कर सकते हैं, कार्यालयों में शारीरिक सक्रियता के अवसर दे सकते हैं और सरकार ऐसी नीतियाँ बना सकती है जो स्वस्थ विकल्पों को आसान एवं सुलभ बनाएं।

विश्व हृदय दिवस केवल एक दिन की औपचारिक जागरूकता का अवसर नहीं है। यह हमें अपने जीवन की दिशा पर पुनर्विचार करने का अवसर देता है। हमें यह समझना होगा कि हृदय को स्वस्थ रखने के लिए किसी चमत्कार की प्रतीक्षा नहीं करनी है; छोटे-छोटे सही निर्णय ही बड़े परिणाम देते हैं। आज आधा घंटा चलना, आज भोजन में संयम रखना, आज तनाव को कम करना, आज धूपपान को छोड़ना, आज अपनी जांच कराना—ये छोटे कदम कल किसी बड़े संकट को रोक सकते हैं।

हृदय की थड़कन हमें हर क्षण एक संदेश देती है—जीवन अनमोल है, इसे असंतुलित जीवनशैली के हवाले मत करो। आधुनिकता अपनाएं, लेकिन प्रकृति से संबंध न तोड़ें; सुविधाएं लें, लेकिन श्रम को जीवन से बाहर न करें; सफलता पाएं, लेकिन स्वास्थ्य की कीमत पर नहीं।

विश्व हृदय दिवस पर संकल्प यही हो—दिल को केवल थड़कने नहीं, स्वस्थ, शांत और प्रसन्न रहने दें। क्योंकि स्वस्थ हृदय ही स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज की आधारशिला है।

ललित गर्ग

भारत चल पड़ा है नई औद्योगिक क्रांति के पथ पर

भारत में आज एक ई औद्योगिक क्रांति प्रारम्भ हो चुकी है, यह विचार अमेरिका की एक जानी मानी निवेश बैंक - जे फ्रीज़ी ने व्यक्त किया है। भारत में, विशेष रूप से डाटा केंद्र स्थापित करने के उद्देश्य से करोड़ों अमेरिकी डॉलर का निवेश होता हुआ दिखाई दे रहा है। भारत में डाटा केंद्र स्थापित करने पर केंद्र सरकार की ओर से टेक्स में भारी भरोसा छूट भी प्रदान की जा रही है। अतः भारत में डाटा केंद्र स्थापित करने की तो जैसे होड़ सी मच गई है। पिछले 5 वर्षों के दौरान भारत में डाटा केंद्रों की गमता दोगुनी हो चुकी है एवं आगे आने वाले 5 वर्षों के दौरान यह गमता बढ़कर 10 तहड़ हो जाने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। वैश्विक स्तर पर डाटा केंद्र अब एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभर रहा है। साथ ही, भारत में सेमीकंडक्टर उत्पादन इकाइयों को उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना के अंगरंग लाभ प्रदान किया जा रहा है, इसके लिए 1,300 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि निर्धारित की गई है। इसका परिणाम यह है कि सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में विनिर्माण इकाइयों की स्थापना हेतु भारत में 2,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश किया जा चुका है, और यह आगे भी जारी है।

[illegible]

उच्चस्तरीय उत्पादों का निर्माण भी वर्षों में मोबाइल कम्पोनेंट में घरेलू भ्रम 20 प्रतिशत से बढ़कर 50 फी.सं सम्भावना व्यक्त की जा रही है। भारत आज वैश्विक स्तर पर दूसरा पीपीपी का उत्पादक देश बन गया है। है कि वर्तमान में भारत की 35 तहल्लू बंगलूरू है एवं 100 तहल्लू की क्षमता पर एवं चेन्नई में वैश्विक योग्यता केंद्रों आरटीफिशियल इंटेलिजेन्स के क्षेत्र है। हैदराबाद की एक कम्पनी ने हैदराबाद में विशाल स्तर पर अपने कार्यालय की स्थापना की है। बंगलूरू, हैदराबाद, चेन्नई एवं पुणे से अधिक वैश्विक योग्यता केंद्र चुके हैं, इन केंद्रों में 19 लाख से कार्यरत हैं। भारत आज आउटसोर्सिंग

बड़ी 100 कम्पनियों की सूची में कम्पनियाँ शामिल हो चुकी हैं। कुल भारत केकेवल फार्मा, टेक्स्टाइल, चमड़ा तथा (मसाला, आदि) स्टील, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में ही का उत्पादों का निर्यात करने में सफल है स्थितियाँ बदल गई हैं एवं अन्य से डाटा केंद्र, सेमीकंडक्टर उत्पादन, निक्स क्षेत्र, मोलार क्षेत्र, सुरक्षा क्षेत्र पर भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। टैलेटेंट एवं श्रम के भरोसे विश्व की के बीच आगुत भारत में शिक्षा केन्द्रों (जीसीसी) की स्थापना करने है। ब्रिटेन में फार्मा के क्षेत्र में कार्य ने - एस्ट्रोजेनेका चेन्नई नें आयुता केन्द्र की स्थापना की है। वैक

बढ़कर उच्च स्त्रीय टैलेटेंट केन्द्र हो रहा है। भारत में स्थापित किए गयेता केन्द्रों में से लगभग अमेरिकी कम्पनियों द्वारा स्थापित कम्पनियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में का कार्य इन केन्द्रों पर सम्पूर्ण टेक्नॉलॉजिकी के क्षेत्र में नए नए उत्तर इन्हीं केन्द्रों में किया जा रहा है। रणनीति कायं कर रही अमेरिका की ही एनपी भी फरवरी 2026 में मुंबई में केन्द्र की स्थापना की है, इस केन्द्र समय में एवं अधिक विस्तार दि इसी प्रकार, बीमा, बैंकिंग, सिस्वयुरिटी, फार्मा एवं सुरक्षा के अनेक कंपनियाँ भारत में अपने केन्द्रों की स्थापना कर रही है।

अपना सबसे बड़ा बैंक ऑफिस
गणित किया है, इस बैंक के पूरे विश्व
कार्य कर रहे 11,000 कर्मचारी इस
हैं। अमेरिका के सबसे पुराने वित्तीय
बैंक ऑफ न्यूयॉर्क, मेलोन ने पुणे
पूर्व में, अमेरिका एवं अन्य विकसित
से ब्रेन ड्रेन हो रहा था, परंतु अब
से बदल रही हैं एवं अब विशेष रूप
भारत को रिवर्स ब्रेन ड्रेन होने ला
प्रशासन की नीतियों के चलते

स्थापना की है। मैं कार्य करने के तबरी 2026 में एक अंतरराष्ट्रीय आज़ 1,700 पाषाणित किए जा शिक्क कर्मचारी ग हब से आगे रूप में स्थापित कुल वैश्विक प्रतिशत केंद्र एग हुए हैं। इन जा रही रीसर्च रहे हा है एवं का निर्माण भी के क्षेत्र में कम्पनी टूँब्रिज शिवक योग्यता आगे आने वाले जाने वाला है। प्रॉय, साइबर स्पेस में कार्यरत शिवक योग्यता देशों को भारत रिस्थितिजां तेजी से अमेरिका से है क्योंकि ट्रम्प

अमेरिका में जाने वाले टैलेन्ट का अमेरिका में रहना अब मुश्किल हो रहा है। अमेरिका एवं अन्य यूरोपीयन देशों में पूँजीवाद एवं साम्यवाद की नीतियों के चलते इन देशों में जन्म दर भी लगातार कम हो रही है। इन देशों में समाज में प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने आप पर ध्यान केंद्रित किए हुए है। विवाह जैसी अति पवित्र संस्था पश्चिमी देशों ने केवल मौजूद मस्ती का माध्यम बना दिया गया है। केवल कामुकता के लिए विवाह नहीं किया जाता है जबकि यह एक सामाजिक जिम्मेदारी है। भारतीय दर्शन में अपने कुल को आगे बढ़ाने के लिए विवाह को एक पवित्र संस्था माना गया है। जबकि, पश्चिमी देशों में आज विवाह को आवश्यक ही नहीं माना जा रहा है बल्कि वहाँ के नागरिक तबिब इन रिलेशनशिप में भी रहने लगे हैं। इन देशों में तलाक़ की दर में अतुलनीय वृद्धि दर्ज हो रही है। इन देशों में सामान्य जीवन यापन की लागत बहुत अधिक महंगी हो रही है। साथ ही, पश्चिमी दर्शन में पुनर्जन्म में विश्वास नहीं किया जाता है, जो कुछ भी भोगना है केवल इसी जन्म में सम्पन्न करना है। अतः इन देशों में अपनी पीढ़ी को आगे बढ़ाने के लिए बच्चे पैदा करना आवश्यक नहीं समझा जा रहा है। इन देशों में समाज की जीवन शैली इस प्रकार की बन गई है कि केवल अपने अपने पर ध्यान केंद्रित करें एवं अपनी काया को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होना चाहिए, परिवार पर एवं समाज पर किसी नागरिक का ध्यान बहुत कम है। पश्चिमी देशों में नागरिक, ‘मैं और केवल मैं’ किस प्रकार अधिक से अधिक सुखी इच्छा कर सकता हूँ, इस विषय पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित किए हुए हैं।

(लेखक- प्रहलाद सबनानी / इएमएस)

टेस्ट में सबसे तेज 13000 रन बनाने वाले 5 बल्लेबाजों में दो भारतीय भी शामिल



मुम्बई (ईएमएस)। टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज 13000 रन बनने वाले विश्व के पांच बल्लेबाजों में दो भारतीय भी शामिल है। इस विशिष्ट सूची में भारत के सचिन तेंदुकर और राहुल द्रविड़ के अलावा, दक्षिण अफ्रीका के जैक कालिस और ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग व इंग्लैंड के जो रूट भी शामिल हैं। सबसे पहले ये उपलब्धि सचिन ने हासिल की थी। सचिन को इस आंकड़े तक पहुंचने में 20 साल और 63 दिन का समय लगा था। उन्होंने साल 2010 में बांग्लादेश के खिलाफ 163 वें टेस्ट मैच की 266वीं पारी के दौरान सबसे तेजी से 13,000 रन पूरे करने का रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज कर लिया। वहीं इस सूची में दूसरे नंबर पर दक्षिण अफ्रीकी ऑलराउंडर जैक्स कैलिस हैं। कैलिस ने 2 जनवरी 2013 को न्यूजीलैंड के खिलाफ केप टाउन में यह उपलब्धि हासिल की। अपने डेब्यू के 17 साल और 19 दिन बाद, 159वें मैच की 269वीं पारी में कैलिस ने 13,000 रनों का आंकड़ा पार किया। इस प्रकार उन्होंने 13000 तक पहुंचने के लिए सचिन से केवल 3 पारियां अधिक खेलीं। इसी सूची में तीसरा नाम ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तानो रिकी पोंटिंग को है। पोंटिंग ने . 24 जनवरी 2012 को भारत के खिलाफ एडिलेड के ओवल के ऐतिहासिक मैदान पर अपने 13,000 रन 162वां मैच की 275वीं पारी में पूरे किये। अपने डेब्यू से लेकर इस पड़ाव तक पहुंचने में उन्हें 16 साल और 47 दिन का समय लगा। इसके बाद नाम आता है भारत के मिस्टर भरोसेमंद कहे जाने वाले



राहुल द्रविड़ था। द्रविड़ ने 22 नवंबर 2011 को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में वेस्ट इंडीज के खिलाफ खेलते हुए अपने करियर के 160वें मैच की 277वीं पारी में अपने 13,000 रन पूरे किए। डेब्यू से लेकर इस पड़ाव तक पहुंचने में उन्हें 15 साल और 155 दिन लगे। क्रीज पर टिककर खेलने के कारण ही वह यहां तक पहुंच पाये।

वर्तमान समय के क्रिकेटर्स की बात करें तो इस सूची में एकमात्र नाम इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान जो रूट का है। 13 दिसंबर 2012 को भारत के खिलाफ नागपुर में अपने टेस्ट करियर की शुरुआत करने वाले रूट ने 22 मई 2025 को जिम्बाब्वे के खिलाफ नॉटिंगम में खेलते हुए 13,000 रनों का कठिन आंकड़ा हासिल कर लिया। अहम बात ये रही कि पारियों के लिहाज से रूट ने 279 पारियों (153 मैचों) में ही यह कारनामा किया, लेकिन समय के मामले में उन्होंने सबसे कम समय 12 साल में ही वे इस आंकड़े तक पहुंचने वाले एकमात्र खिलाड़ी हैं।

23वीं राज्य स्तरीय आर्चरी चैंपियनशिप का शुभारंभ, प्रदेशभर से जुटे तीरंदाज

जबलपुर, यश भारत। मध्य प्रदेश अमेच्योर आर्चरी एसोसिएशन के तत्वावधान में 23वीं जूनियर एवं सीनियर राज्य स्तरीय आर्चरी चैंपियनशिप का शुभारंभ रविवार को हुआ। प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुंचे खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और तीरंदाजी की विभिन्न स्पर्धाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता में 70 मीटर रिकर्व, 50 मीटर कंपाउंड और 30 मीटर इंडियन राउंड की स्पर्धाएं आयोजित की गईं। इसमें अलीराजपुर, झाबुआ, धार, धार एसएआई, इंदौर, देवास, खरगोन, उज्जैन, गुजालपुर, सीहोर, भोपाल, नर्मदापुरम, नरसिंहागढ़, जबलपुर, सतना, रीवा, सिंगरौली, भिंड, आमी और सागर सहित विभिन्न जिलों की टीमों ने भाग लिया।

खिलाड़ियों को मेहनत और अनुशासन का संदेश उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि जबलपुर कैंट विधायक अशोक रोहाणी और मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ के सचिव दिग्विजय सिंह मौजूद रहे। कार्यक्रम की

अध्यक्षता मध्य प्रदेश अमेच्योर आर्चरी एसोसिएशन के अध्यक्ष सीए अखिलेश जैन ने की। इस दौरान डीके विद्यार्थी, वेद कुमार, मध्यप्रदेश राज्य आर्चरी अकादमी के मुख्य प्रशिक्षक, पुष्पराज सिंह, अभय नायक, दिलीप गंग सहित अन्य पदाधिकारी और खेलप्रेमी उपस्थित रहे।

अशोक रोहाणी ने खिलाड़ियों को निरंतर मेहनत, अनुशासन और समर्पण के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। दिग्विजय सिंह ने खिलाड़ियों को खेल में निरंतर सुधार और बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया। अध्यक्ष सीए अखिलेश जैन ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि एसोसिएशन की ओर से खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन के लिए आवश्यक सुविधाएं और हरसंभव सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा। वेद कुमार ने नियमित अभ्यास और खेल में निरंतर प्रगति के महत्व पर प्रकाश डाला।

जूनियर वर्ग के परिणाम- जूनियर वर्ग की कंपाउंड पुरुष स्पर्धा में राज कौरव ने प्रथम, दीक्षांत



करौले ने द्वितीय और समर जटविया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कंपाउंड महिला वर्ग में त्रिज्या पाटिल प्रथम, नेहा राज द्वितीय और पारुल नंदा तृतीय रहीं।

रिकर्व पुरुष वर्ग में दीपांशु नंदा ने प्रथम, हरि ठाकुर ने द्वितीय और वंश डगर ने तृतीय स्थान हासिल किया। रिकर्व महिला वर्ग में आर्याशा प्रजापत प्रथम, प्रीति यादव द्वितीय और प्राची भायन तृतीय रहीं।

इंडियन राउंड पुरुष वर्ग में कुश नामदेव ने प्रथम,

रोहित गुप्ता ने द्वितीय और ओम प्रकाश साकेत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इंडियन राउंड महिला वर्ग में ऐश्वर्या सैनी प्रथम, निशा अहिरवार द्वितीय और भाव्या शर्मा तृतीय रहीं।

जूनियर वर्ग की स्पर्धाओं के बाद अब 28 सितंबर से सीनियर वर्ग की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता शुरू होगी। इसमें प्रदेश के विभिन्न जिलों के खिलाड़ी रिकर्व, कंपाउंड और इंडियन राउंड स्पर्धाओं में हिस्सा लेंगे।

एशियाई खेलों के सेमीफाइनल में पहुंची भारतीय तीरंदाजी टीम

नगोया (ईएमएस)। भारतीय तीरंदाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एशियाई खेलों की तीरंदाजी स्पर्धा के सेमीफाइनल में प्रवेश किया है। इन खेलों में शामिल भारतीय कंपाउंड और रिकर्व मिक्स्ट टीमों ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए अंतिम चार में जगह बनायी। इस टूर्नामेंट में प्रदर्शन के आधार पर लास एंजिल्स ओलंपिक के लिए टीम को प्रवेश मिलेगा। इससे ये और भी अहम हो जाती है।

कंपाउंड मिश्रित टीम स्पर्धा में चिकित्हा तानिपाथी और साहिल जाधव की जोड़ी ने सटीक निशाने लगाते हुए राउंड ऑफ 16 में मंगोलियाई टीम को 160-146 से हराया। इसके बाद, क्वाटर फाइनल में कजाकिस्तान के खिलाफ मिली 159-154 की जीत के साथ ही सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

वहीं रिकर्व मिश्रित टीम स्पर्धा में धीरज बोम्मादेवरा और कुमकुम अनिल मोहोद की जोड़ी ने भी अच्छा प्रदर्शन करते हुए राउंड ऑफ 16 में यूई को 6-0 से हराया। इसके बाद क्वाटर फाइनल में वियतनाम के खिलाफ भी 6-0 से जीत दर्ज करते हुए सेमीफाइनल में जगह बनायी।

इससे पहले, कंपाउंड महिला और पुरुष टीमों ने भी जीत के साथ सही सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ज्योति सुरेखा वेन्नाम, चिकित्हा तानिपाथी और पृथिका प्रदीप की महिला टीम ने क्वाटर फाइनल में कजाकिस्तान की रोकसाना यूनसोवा, विक्टोरिया



ल्यान और एडेल जेक्सेनबिनोवा की टीम को 233-230 से हराया जबकि कुशल दलाल, साहिल जाधव और गणेश मणिरत्नम की पुरुष टीम ने भूटान के केजांग नोरबु, त्सेतुम गेल्गे और टंडिन दोरजी को क्वाटर फाइनल में 235-232 से हराकर अंतिम चार में प्रवेश किया। कुल मिलाकर, इन खेलों से ओलंपिक खेलों के लिए आठ कोटा स्थान दांव पर हैं। इनमें रिकर्व पुरुषों और महिलाओं के व्यक्तिगत स्पर्धाओं में दो-दो कोटा जगहें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, रिकर्व मिश्रित टीम और कंपाउंड मिश्रित टीम चैंपियनों में से प्रत्येक को पुरुषों और महिलाओं का एक-एक कोटा मिलेगा, जिससे शीर्ष स्थान के लिए संघर्ष और बढ़ गया है।

जापान के कोच बोले, देश में कबड्डी की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही

बैंकाक (ईएमएस)। थाईलैंड की पुरुष कबड्डी टीम के कोच रवींद्र शेठ्टी ने एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीतने पर खुशी जताते हुए कहा है कि अब देश में कबड्डी की लोकप्रियता बढ़ रही है। यह महाद्वीपीय प्रतियोगिता में थाईलैंड का कबड्डी में पहला पदक है। थाई कोच शेठ्टी भारत के हैं और उनका मानना है कि इस पदक से साफ है थाईलैंड में कबड्डी की लोकप्रियता बढ़ रही है। थाई टीम को जापान के नगोयो में हुए सेमीफाइनल मुकाबले में भारतीय टीम के हाथों से 28-66 से हार का सामना करना पड़ा था। इस हार के बाद थाई टीम को कांस्य मिला है।

भारतीय टीम ने इस मैच में अपना प्रभाव बनाये रखा, हाफ-टाइम तक टीम ने 37-18 की मजबूत बढ़त ली और अंत में 66-28 के बड़े अंतर से जीत दर्ज की की। भारतीय टीम ग्रुप-ए में अपने सभी चार मैच जीतकर सेमीफाइनल में पहुंची थी। पिछले तीन साल से थाईलैंड में कबड्डी की कोचिंग दे रहे शेठ्टी ने कहा कि उन्होंने 2022 हांगझोउ एशियन गेम्स के बाद वहीं बिल्कुल शून्य से काम शुरू किया था। उन्होंने कहा, मैं पिछले तीन वर्षों से वहां कबड्डी की कोचिंग दे रहा हूँ। मैंने तीन साल पहले वहां शून्य से शुरुआत की



थी। मैंने हांगझोउ एशियन गेम्स के बाद काम शुरू किया। अब, कबड्डी सीखने के बाद वे आगे बढ़ रहे हैं और थाईलैंड में भी कबड्डी लोकप्रिय हो रही है। रवींद्र ने बताया कि थाईलैंड में जमीनी स्तर पर कबड्डी के विकास ने गति पकड़ी है, खासकर स्कूली प्रतियोगिताओं और युवा कार्यक्रमों के माध्यम से। उन्होंने कहा, अभी, स्कूली स्तर पर कबड्डी शुरू हो रही है। हमारे अध्यक्ष हर चार महीने में युवा खेल आयोजित करते हैं। इसी वजह से कबड्डी का विकास हो रहा है। कोच ने यह भी बताया कि उनकी अकादमी में अभी 60 से ज्यादा युवा खिलाड़ी हैं, जिनमें 35 लड़कियां और 30 लड़के शामिल हैं, जो थाईलैंड के अलग-अलग हिस्सों जैसे बैंकाक, चोनबुरी और अन्य राज्यों से प्रशिक्षण के लिए आते हैं।

रंग संभार

ढिंडोरा 2 अब नेटफिलक्स पर दस्तक देने को तैयार



मुंबई (ईएमएस)। दर्शक लंबे समय से अभिनेता भुवन बाम की पॉपुलर सीरीज ढिंडोरा के दूसरे सीजन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इस सीरीज ने भुवन बाम के बनाए किरदारों को घर-घर तक पहुंचा दिया था, और अब, ढिंडोरा 2 एक बड़े प्लेटफॉर्म नेटफिलक्स पर दस्तक देने के लिए पूरी तरह से तैयार है। यूट्यूब पर रिलीज हुई ढिंडोरा 2 सीरीज की पहली झलक सामने आने के बाद फैंस के बीच इसे लेकर उत्साह और बढ़ गया है। हाल ही में सीरीज के अनुभव को लेकर भुवन ने बताया कि इस सीजन को स्क्रीन तक लाना उनके लिए बिल्कुल आसान नहीं था। इसके लिए उन्हें कई ड्राफ्ट, जोक्स और स्टोरीलाइन पर बार-बार काम करना पड़ा।

भुवन बाम ने ढिंडोरा 2 बनाने के सफर और अपने जुड़ाव के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने कहा, सीरीज ढिंडोरा मेरे लिए बेहद खास है। इसके किरदार पिछले कई सालों में मेरे और दर्शकों के साथ-साथ बड़े हुए हैं। इसके सीजन 2 पर लंबे समय से काम चल रहा था और अब जब इसकी पहली झलक दर्शकों के सामने आई है, तो मेरे लिए यह पल काफी यादगार बन गया है। भुवन ने जोर देते हुए कहा, ढिंडोरा 2 में पहले सीजन से ज्यादा पागलपन होगा, लेकिन इसकी सबसे जरूरी बात यह है कि इसमें उस दुनिया का पुराना मजा और अपनापन भी बना रहेगा। मैं नहीं चाहता कि बड़े प्लेटफॉर्म पर जाने की वजह से शो अपनी असली पहचान खो दे। इसलिए कहानी को बड़ा करने के साथ-साथ उन चीजों को भी संभालकर रखा गया है, जिनसे दर्शक पहले सीजन में जुड़े थे।

उन्होंने बताया कि सीजन 2 को तैयार करने के दौरान सबसे बड़ी चुनौती कहानी को लेकर थी। इस प्रोजेक्ट पर काम करते हुए कई ड्राफ्ट लिखे गए। सिर्फ कहानी ही नहीं, बल्कि कई जोक्स और स्टोरीलाइन को भी बार-बार बदला गया। मेरा मकसद यह था कि आखिर में जो कहानी दर्शकों तक पहुंचे, वह उन्हें सही लगे और मेरी मौजूदा सोच से भी जुड़ सके। भुवन ने आगे कहा, अब ढिंडोरा 2 जिस मुकाम पर पहुंचा है, वह आज की सोच और मेच्योरिटी से काफी जुड़ा हुआ है। सीरीज में कुछ ऐसे मुद्दों को भी छूने की कोशिश की गई है, जिन पर मैं खुद भरोसा करता हूँ। उन्हें स्पर्शित है कि पुराने फैंस को इसमें वही अपनापन मिलेगा, जिसके लिए वे इस सीरीज को पसंद करते आए हैं, साथ ही नई ऑडियंस भी इस कहानी और इसके किरदारों से जुड़ पाएगी। बीबीकेवी प्रोडक्शन्स के फाउंडर और प्रोड्यूसर रोहित राज ने भी ढिंडोरा के इस सफर को खास बताया। उन्होंने कहा, एक इंडिपेंडेंट यूट्यूब सीरीज से नेटफिलक्स तक पहुंचना काफी बड़ा सफर रहा है।

दूसरे सीजन को बड़े लेवल पर बनाने की कोशिश की गई है, लेकिन टीम ने यह भी ध्यान रखा कि पहले सीजन की वह मस्ती, पागलपन और पहचान कहीं खो न जाए। मालूम हो कि ढिंडोरा का पहला सीजन 2021 में यूट्यूब पर रिलीज हुआ था और उसे दर्शकों का काफी प्यार मिला था।

ओटीटी पर काम कर खुश हैं आशा नेगी, कहती हैं - अब प्रोजेक्ट्स के बीच अपनी जिंदगी जी पाती हूं

मुंबई (ईएमएस)। अभिनेत्री आशा नेगी इन दिनों अपनी वेब सीरीज अली बाबा और 40 भूत में अलीशा निगम के किरदार से दर्शकों के दिलों में एक खास जगह बना रही हैं। अभिनेत्री ने हाल ही में एक बातचीत में बताया कि वह इस समय अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर काम करने की आजादी का भरपूर लुफ्त उठा रही हैं। उन्होंने अपने टीवी सफर को याद करते हुए कहा कि अब उन्हें ऐसा काम करने में मजा आ रहा है जो उन्हें प्रोजेक्ट्स के बीच थोड़ा खुद के लिए जीने का मौका देता है, और फिर बिल्कुल अलग किरदारों में पढ़ें पर लौटने का अवसर मिलता है। आशा नेगी ने अपनी अभिनय यात्रा और प्राथमिकताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा, मैं एक एक्टर हूँ और बस एक्टिंग करना चाहती हूँ। अच्छे प्रोजेक्ट्स करना चाहती हूँ, चाहे वो ओटीटी हो, फिल्म हो या फिर टेलीविजन। फिलहाल मैं बस आजाद रहना चाहती हूँ और इस समय मैं ज्यादा ओटीटी इसलिए कर रही हूँ क्योंकि यह एक-दो या तीन महीने में खत्म हो जाता है और फिर आप प्री हो जाते हो। उन्होंने विस्तार से बताया कि ओटीटी पर काम करने के बाद उन्हें अपनी जिंदगी को भी



बेहतर तरीके से जीने का मौका मिलता है। आशा नेगी ने कहा, फिर आप थोड़ी अपनी जिंदगी भी जीते हैं क्योंकि मुझे याद है कि टेलीविजन पर काम करते हुए मेरी अपनी कोई जिंदगी ही नहीं थी। हालांकि, ओटीटी में काम करने के बाद आप थोड़ा अपनी जिंदगी जीते हैं, फिर आप दूसरे प्रोजेक्ट पर जाते हैं और आप एक बिल्कुल अलग किरदार निभा रहे होते हैं।

‘अभिनेत्री आशा नेगी ने जोर देकर कहा कि उन्हें ए-एनए किरदारों को एक्सप्लोर करने की यह पूरी प्रक्रिया बेहद पसंद आ रही है, क्योंकि यह उन्हें एक कलाकार के रूप में विकसित होने और विभिन्न भूमिकाओं में ढलने का अवसर देती है। उनकी वर्तमान वेब सीरीज अली बाबा और 40 भूत में, आशा नेगी ने अलीशा निगम नाम की एक गोस्ट वटर का दमदार किरदार निभाया है।



आलिया भट्ट की फिल्म ‘डॉट बी शाय’ ने जीता मां सोनी राजदान का दिल

मुंबई (ईएमएस)। अभिनेत्री आलिया भट्ट की नवीनतम रोमांटिक कॉमेडी फिल्म डॉट बी शाय ने शुक्रवार को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दस्तक दी, जिसके बाद उनकी मां और अनुभवी अभिनेत्री सोनी राजदान ने फिल्म की दिल खोलकर तारीफ की। सोनी राजदान ने इंस्टाग्राम स्टोरीज सेक्शन पर फिल्म की स्क्रीनिंग की एक तस्वीर साझा करते हुए निर्देशक श्रीति मुखर्जी और फिल्म से इंडस्ट्री में कदम रखने वाले पाँच नए प्रतिभाशाली चेहरों को विशेष बधाई दी। उन्होंने लिखा, बधाई हो, ये एक शानदार फिल्म है और इसके साथ ही 5 नए टैलेंट ने इंडस्ट्री में कदम रखा है। श्रीति मुखर्जी को दिल से सलाम, दिल और पागलपन से भरी एक फिल्म बनाने के लिए। नए चेहरों की बेहद टैलेंटेड कास्ट ने इसे बखूबी निभाया है। यह फिल्म आलिया भट्ट के लिए निर्माता के तौर पर एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट है। उन्होंने अपनी नहन शाहीन भट्ट के साथ मिलकर अपने प्रोडक्शन हाउस इंटरनल सनशाइन प्रोडक्शन्स के बैनर तले इस फिल्म को रिलीज किया है। श्रीति मुखर्जी द्वारा निर्देशित यह फिल्म मुख्य रूप से चार नए कलाकारों आरुषि बजाज, अंश दुगल, बिर्याका अरोड़ा और पीयूष खाटी को दर्शकों के सामने लेकर आई है। इनके अलावा, अनुभवी कलाकार कुणाल रॉय कपूर, नेहा धूपिया और अनुपम बसु भी फिल्म में अहम भूमिकाओं में हैं, जिससे कहानी को और गहराई मिलती है।

ऋतिक के साथ बनाये छोटे से वीडियो ने बदल दी प्राजक्ता के कैरियर की दिशा

मुंबई (ईएमएस)। सफल कंटेंट क्रिएटर, अभिनेत्री और लेखिका के तौर पर आज प्राजक्ता कोली डिजिटल दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना चुकी हैं। प्राजक्ता कोली को मोस्टली सेन के नाम से जाना जाता है। कंटेंट क्रिएशन के बाद उन्होंने एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा और मिसमैट्स से दर्शकों के बीच पहचान बनाई। इसके अलावा वह यूट्यूब के क्रिएटर्स फॉर चेंज प्रोग्राम का हिस्सा बनीं और मालूम हो कि प्राजक्ता का सपना सिर्फ एक रैंडियो जॉकी बनने का था। अपने इस सपने को पूरा करने के लिए वह एक रैंडियो स्टेशन में इंटरनिशर कर रही थीं। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि एक दिन रैंडियो स्टेशन पर ऋतिक रोशन के साथ बनाया गया एक छोटा-सा वीडियो उनके करियर की दिशा पूरी तरह बदल देगा और उन्हें यूट्यूब की दुनिया में ले आएगा। हाल ही में पहला पहला के लेटेस्ट एपिसोड में गोपाल दत्त के साथ बातचीत के दौरान प्राजक्ता ने अपने शुरुआती दिनों को याद किया। उन्होंने बताया कि वह



ठाणे में पली-बढ़ीं और बचपन से ही रैंडियो की दुनिया में काम करने का सपना देखती थीं। इसी सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने रैंडियो स्टेशन में इंटरन के तौर पर काम करना शुरू किया। उस समय फिल्म बैंग बैंग रिलीज होने वाली थी और ऋतिक रोशन अपनी फिल्म के प्रमोशन के लिए

रैंडियो स्टेशन आए थे। प्राजक्ता ने बताया, रैंडियो स्टेशन पर जब भी कोई एक्टर फिल्म के प्रमोशन के लिए आता था, तो वह एक तरह की परंपरा थी। टीम के लोग उस एक्टर के गानों पर डांस करते थे। मैं उस समय इंटरन थी, इसलिए मुझे भी डांस करने के लिए कहा गया। मेरे लिए यह मौका खास था, क्योंकि मैं बचपन से ही ऋतिक रोशन की बड़ी फैन रही हूँ। प्राजक्ता ने आगे बताया कि वह डांस करने के लिए तैयार हो गईं और ऋतिक के साथ परफॉर्म भी किया। उस दौरान ऋतिक की टीम में सुदीप भी मौजूद थे, जिन्होंने डांस के बाद प्राजक्ता का ऋतिक के साथ एक छोटा-सा वीडियो भी शूट किया। प्राजक्ता ने कहा, उस समय मुझे लगा भी नहीं था कि इस वीडियो से आगे कुछ होने वाला है। लेकिन इसी वीडियो ने मेरे लिए एक नया रास्ता खोल दिया। सुदीप उनके पास आए और पूछा कि क्या वह इस तरह के वीडियो बनाती हैं। प्राजक्ता ने साफ कहा कि वह ऐसा कुछ नहीं करतीं। इसके बाद सुदीप ने उन्हें अपना कार्ड दिया और सलाह दी कि उन्हें यूट्यूब के लिए कंटेंट बनाना चाहिए।

